International Journal of Academic Research
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

प्रवासी साहित्यकार उषा प्रियंवदा और तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में आत्मनिर्भरता

वारुणि बक्कि[1], डॉ. हरिराम प्रसाद पसुपुलेटि[2]
[1]शोधार्थी, पिठापुर राजा शासकीय महाविद्यालय, आदिकवि नन्नया विश्वविद्यालय से संबद्ध, राजमहेंद्रवरम.
[2]शोधनिर्देशक और विभागाध्यक्ष, पिठापुर शासकीय महाविद्यालय, काकिनाडा

प्रवासी शब्द और साहित्य का परिचय :

'भारत में प्रवासी भारतीयों की चर्चा तथा उनके सम्बन्ध में गंभीर चिंतन मनन का शुभारम्भमहात्मा गाँधी द्वारा दक्षिण अफ्रिका में व्यतीत किये गये लगभग इक्कीस वर्षो के उस संघर्षमयी जीवन यात्रा से माना जा सकता है जिसने पूरे विश्व का ध्यान अपनी और आकृष्ट किया। सही अर्थों में यह भारत के प्रवासी समुदाय से एकात्म स्थापित करने की एक ऐसी आरम्भिक पहल थी जिसनें जल्द ही विभिन्न देशों में रहनेवाले गिरमिटिया बने भारतीय मजदूरों में एक नयी संचेतना का संचार किया। उनमें स्वत्व का भाव जागृत कर अपनी संस्कृति एवं भाषा को अक्षुण्ण बनाए रखने का भाव पुष्ट किया।

विदेश में रहने वाले रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा दो संस्कृतियों की टकराहट, भारतीयता तथा पाश्चात्यता के मध्य प्रवासियों की स्थिति, पुनः अपने देश लौट आने की तड़प और ललक, प्रवासी जीवन के अनुभवों आदि का गहनता से वर्णन किया है। प्रवासी साहित्य का अपना एक वैशिष्ट्य है जो इन साहित्यकारों की रचनाओं की संवेदनाओं, परिवेश, जीवन दृष्टि में दृष्टिगत है।
प्रवासी हिंदी कथा साहित्य निश्चित रूप से कथानक, शैली और शिल्प की दृष्टि से भिन्न और विशिष्ट पहचान रखता है। उपर्युक्त देशों में रचित हिंदीसाहित्य स्थानीय परिवेशजनित साहित्य है जिसमें उस देश और काल की स्थितियों का चित्रण होता है। हर देश में सामाजिक नियम, जीवन पद्धति उस देश की संस्कृति और परंपराओं से बँधे होते हैं। लेखक अपने परिवेश में जनित समस्याएँ, स्त्री-पुरुष संबंध, वैयक्तिक मनोदशाओं का चित्रण निजी शैली में करता है। विदेशों में रचित हिंदी कथा साहित्य कई अर्थों में भिन्न है। इसमें स्थानीयता के तत्व प्रधान होते हैं, किन्तु मानवीय संवेदनाएँ देश कालाओं का अतिक्रमण करते हैं इसीलिए प्रेम, राग, विराग जैसे संवेदनाओं की अभिव्यक्ति प्रवासी साहित्य में उसी प्रकार दिखाई देती है।

आत्म निर्भरता की परिभाषा:

आत्मनिर्भरता का अर्थ है अपने बलबूते पर खड़े होना और किसी पर निर्भर न रहना। यह एक महत्वपूर्ण गुण है जो व्यक्ति को आत्मविश्वास और स्वतंत्रता प्रदान करता है। आत्मनिर्भरता से व्यक्ति अपने जीवन में निर्णय लेने में सक्षम होता है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज और देश की प्रगति के लिए भी आवश्यक है। आत्मनिर्भरता से हम अपने संसाधनों का सही उपयोग कर सकते हैं और दूसरों पर निर्भरता को कम कर सकते हैं। प्रस्तुत और आने वाले दिनों में सभी को आत्म निर्भर रहने की कडी आवश्यकता है क्योंकि हम देख सकते हैं कि आजकल खुद के परिवार में ही एकता दिखाई नहीं देता। संकट के समय में अपनों का साथ मिले न मिले, अगर हम खुद पर निर्भर रहते हैं तो निडर होकर किसी भी समस्याओं का सामना आसानी से कर सकते हैं।

प्रवासी साहित्यकार उषा प्रियंवदा की कहानी 'जाले' में आत्म निर्भरता :

उत्तर प्रदेश के कानपुर की रहनें वाली उषा जी प्रस्तुत में अमेरिका यानि यू.एस.ए में स्थित हैं। उषा जी हिंदी साहित्य की एक प्रमुख आधुनिक कहानीकार, उपन्यासकार और अनुवादक हैं, जो नई कहानी आंदोलन से जुड़ी रही हैं। उनकी कहानियों में से एक है 'जाले'। भले ही यह कहानी आधुनिक पारिवारिक संबंध, अकेलेपन और मानसिक द्वंद्व का आभास कराता है पर इसमें 'कौमुदी' पात्र के द्वारा आत्म निर्भरता की झलक दिखाई पड़ती है।

"वह उन आधुनिक युवतियों में से थी, जो पुरुषों से शत-प्रतिशत समानता का दावा करती हैं। यूनिवर्सिटी से एम.ए. कर और एक प्रभावशाली सम्बन्धी के द्वारा पाँच सौ रुपए महीने की सरकारी नौकरी पा, वह माता-पिता से दूर अकेली रहती थी"।

अपने परिवार से दूर और अकेले रहना बहुत ही धैर्य का काम है। कह सकते हैं कि आज के समाज की इन परिस्थितियों में कौमुदी का स्वभाव आत्म निर्भरता का दर्पण है।

"उसके परिचित पुरुषों ने कभी भी अचानक पहुँच जाने पर भी उसे ऑफिस या क्लब के किसी युवक के साथ अकेले नहीं पाया। उनकी पत्नियों को भी कौमुदी से कोई शिकायत न थी। वह उनसे प्रेम और सौहार्द्र से मिलती थी। बच्चों से मीठा बोलती थी"।
उपर्युक्त अवतरण से बेशक कह सकते हैं कि आत्म निर्भरता के साथ साथ कौमुदी का व्यक्तित्व बहुत ही नेक था।

प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा की कहानी "कब्र का मुनाफा" में आत्म निर्भरता :

प्रसिद्ध प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा जी पंजाब के वासी, जो फिलहाल ब्रिटन यानि यू.के में रह रहे हैं, "कब्र का मुनाफा" उन्ही की प्रसिद्ध रचना है।

यह कहानी नौकरी के कारण इग्लैंड में बसे दो मुस्लिम परिवारों की कहानी है। खलील और नजम ने जीवन के तैंतीस साल अपनी कंपनी की सेवा में होम कर दिए हैं। दोनों की यारी के किस्से बहुत पुराने हैं। खलील शराब नहीं पीता और नजम सिगरेट से परेशान हो जाता है। किंतु दोनों की आदतें दोनों की दोस्ती के कभी आड़े नहीं आती हैं। खलील जैदी एक युवा अफसर बन कर आया था इस कंपनी में, किंतु आज उसने अपनी मेहनत और अक्ल से इस कंपनी को यूरोप की अग्रणी फाइनेन्शियल कंपनियों की कतार में ला खड़ा किया है। लंदन के फाइनेन्शियल सेक्टर में खलील की खासी इज्जत है।
बातों बातों में नजम कहता है कि,
"खलील भाई, मरने पर याद आया, आपने कार्पेडर्स पार्क के कब्रिस्तान में अपनी और भाभी जान की कब्र बुक करवा ली है या नहीं?"
और जब खलील यूं कहते हैं कि,
'यार ये अच्छा है, कम से कम हमारे बच्चे हमें दफनाते वक्त अपनी जेबों की तरफ नहीं देखेंगे।

भले ही यह बात कुछ अजीब है पर कह सकते हैं कि हमें इतना आत्म निर्भर होना पड गया कि अपनी खुद की ही कब्र बुक कर लें ? एक ऐसा प्रश्न सामने आ खड़ा हो जाता है कि आखिर समाज में जो दुर्लभ परिस्थितियाँ हैं उनका सामना करने हमें खुद तत्पर रहना पड़ेगा कोई किसी का साथ नहीं देगा न परिवार न पास पडोस ।

निष्कर्ष:

कोई भी साहित्य समाज की तस्वीर पेश करता है। प्रवासी हिंदी साहित्य भी भारतीयों के पलायन व उन्हें मुश्किलों के अलावा उनके जीवन संघर्ष की गाथा को प्रस्तुत करता है।
प्रवासी साहित्यकारों द्वारा हिंदी को विश्व भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
आत्म निर्भरता पर उपर्युक्त दोनों कहानियों में एक अलग सा ही दृष्टिकोण देखने को मिलता है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि प्रवासी साहित्यकारों ने कोई कसर न छोडी जिसमें हम गलतियाँ उठा सके ।

संदर्भ सूचि:

1. संपूर्ण कहानियाँ, उषा प्रियंवदा पृ. 177
2. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, तेजेन्द्र शर्मा पृ. 12
3. 'मिसेज जॉस और वह गली कविता संकलन की भूमिका
4. शर्मा, सुषमा (संपादक). हिन्दी प्रवासी साहित्य से अपेक्षाएँ
5. शर्मा, सुशील. प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन